AA–3205 Seat No. ______

M. A. (Part – II) Examination

April / May – 2003

Hindi (Main) : Paper – V

(आधुनिक कविता)

Time : **3** Hours] [Total Marks : **100**

सूचना : सभी प्रश्नों के अंक **समान** हैं ।

१ 'साकेत' के काव्य–रूप की परीक्षा कीजिये ।

अथवा

१ उर्मिला का चरित्र 'साकेत' का केन्द्रबिन्दु है – सोदाहरण पुष्टि कीजिये ।

२ ''केदार की कविता हर दौर में प्रासंगिक बनी रहती है, और नया अर्थ प्राप्त करती है –'' इस कथन की प्रामाणिकता सिद्ध कीजिये ।

अथवा

२ ''यह कविता आधुनिक जीवन और समय की जटिल वास्तविकता को अत्यन्त अर्थसघन रूप में प्रस्तुत करती है –'' इस कथन के आधार पर 'बाघ' कविता की विशेषता बताइये ।

३ 'निराला' मुख्यतः विद्रोह के कवि हैं' – पठित कविताओं के आधार पर सिद्ध कीजिये ।

अथवा

३ किन्हीं **दो** पर लिखिये :

(१) 'राम की शक्ति–पूजा' का काव्य–सौन्दर्य ।

(२) 'सरोज–स्मृति' का भाव–पक्ष ।

(३) 'तोड़ती–पत्थर' का शिल्प ।

(४) 'कुकुरमुत्ता' की प्रतीकात्मकता ।

४ युगबोध की दृष्टि से 'आत्मजयी' की विषयवस्तु की परीक्षा कीजिये ।

अथवा

४ नचिकेता के चारित्रिक वैशिष्ट्य की सोदाहरण पुष्टि कीजिये ।

५ ससंदर्भ व्याख्या कीजिये :

(१) सखि, विहग उड़ादे, हों सभी मुक्तिमानी,
सुन शठ शुक–वाणी हाय ! रूठो न रानी !
खग, जनकपुरी की ब्याह दूँ सारिका मैं ?
तदपि यह वहीं की त्यक्त हूँ दारिका मैं !

अथवा

(१) सीस हिलाकर दीपक कहता –
'बन्धु !' वृथा ही तू क्यों दहता ?
पर पतंग पड़कर ही रहता !
कितनी विह्वलता है ।
दोनों ओर प्रेम पलता है ।

(२) वह रोटी में नमक की तरह प्रवेश करता है,
तारवे पर रखी हुई रात की रोटी
उसके आने की खुशी में ज़रा सी उछलती है
और एक भूखे आदमी की नींद में गिर पड़ती है ।

अथवा

(२) उन्हें डर है कि एक दिन
नष्ट हो जाएंगे बाघ
कि एक दिन ऐसा आयेगा
जब कोई दिन नहीं होगा
और पृथ्वी के सारे बाघ
धरे रह जायेंगे
बच्चों की किताबों में ।

(३) बाहर मैं कर दिया गया हूँ । भीतर, पर, भर दिया गया हूँ ।
भीतर, बाहर; बाहर भीतर, देखा जब से हुआ अनश्वर;
माया का साधन यह सस्वर;
ऐसे ही धर दिया गया हूँ । बाहर मैं कर दिया गया हूँ ।

अथवा

(३) हवा चली, गले खुशबू लगी कि वे बोले,
समीर सार के होते हैं, ये बहार के दिन ।
नवीनता की आँखे चार जो हुईं उनसे,
कहा कि प्यार के होते हैं ये बहार के दिन ।

(४) लौटती मुझमें ये स्मृतियाँ
अपनों की – अपनी ही
.... वहाँ कोई नहीं ।
अब केवल दुखती है
उन ऊबड़–खाबड़ आकृतियों की तितर–बितर
जिनकी असंख्या में
ये आँखे ऊबीं भर – खोयी नहीं ।

अथवा

(४) व्यक्ति दास ही नहीं देह का
स्वामी भी है
अनुशासित ही नहीं
मुक्त अनुशासक भी है इच्छाओं का ।